8

मसीही व्यक्ति के काम का विवरण

(फिलिप्पियों 2:12–18)

ज़िम्मेदारी दिए जाने पर हम में से अधिकतर लोग काम का विवरण जानना चाहते हैं। हम जानना चाहते हैं कि हम से *क्या* करने की अपेक्षा की गई है और हम इसे *कैसे* करें। नये नियम की कई आयतों को मसीही व्यक्ति के ''काम का विवरण'' का भाग माना जा सकता है। कई आयतें इस बात से सम्बन्धित हैं कि हमें *क्या* करना है। ये आयतें हर मसीही के लिए सामान्य शर्तें बताती हैं–जैसे दूसरों की सहायता करना और परमेश्वर की आराधना करना हमें अपने गुणों और अवसरों का इस्तेमाल करने अर्थात प्रभु की सेवा के अपने विलक्षण ढंगों का पता लगाने की चुनौती भी मिलती है। अन्य भाग इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हम अपनी ज़िम्मेदारियों को *कैसे* पूरा करें। फिलिप्पियों 2:12–18 एक ऐसा ही भाग है। सांसारिक कामों के विवरणों में *ढंगों* का विस्तार दिया जाता है, परन्तु यह मसीही काम का यह विवरण *मन* पर यानी स्वभाव पर ध्यान दिलाता है जो प्रभु के लिए काम करते समय हमारा होना चाहिए।

काम की विनती (2:12क, ख)

आज्ञा मानने की आवश्यकता

आयत 12 में पौलुस ने 1:27 में आरम्भ किए गए व्यावहारिक निर्देश को बहाल कर दिया। ऐसा करते हुए उसने 2:8 से आज्ञापालन का विचार लिया: यीशु ने ''अपने आप को दीन किया और यहां तक *आज्ञाकारी* रहा कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।'' पौलुस ने अब फिलिप्पियों को बताया, ''सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से *आज्ञा मानते* आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी'' (आयत 12क)। आयत 12 का आरम्भ ''सो'' के साथ होता है जो अगली बात को पिछली बात के साथ जोड़ता है: यीशु आज्ञाकारी था; ''सो'' उन्हें भी आज्ञाकारी होना चाहिए। यह शिक्षा कठोर आज्ञा के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रेमपूर्वक सुझाव के रूप में दी गई है: पौलुस ने उन्हें ''मेरे प्रियो'' कहा।

फिलिप्पियों की पिछली आज्ञाकारिता के सम्बन्ध में प्रेरित ने यह अनोखी बात कही: ''तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो।'' यानी वे पौलुस द्वारा बताए गए परमेश्वर के निर्देशों से सदा से मानते आए थे। पौलुस परमेश्वर का प्रतिनिधि था जिस कारण उसके सुनने वालों से परमेश्वर के प्रेरणा से दी गई उसकी शिक्षा को मानने की उम्मीद की जाती थी (देखें रोमियों 1:5; 15:18; 2 कुरिन्थियों 10:6; 2 थिस्सलुनीकियों 3:4; फिलेमोन 21)। यह बात कि वे *सदा से* मानते आए थे कुछ चौंकाने वाली है, क्योंकि प्रेरित की पहली बात में उसने उन्हें याद करने पर *हर बार* परमेश्वर को धन्यवाद दिया था (1:3)! एक बार फिर सम्भव है कि पौलुस अपनी ''चुनिंदा

याद'' का इस्तेमाल कर रहा था। सम्भवतया विचार यह है कि आम तौर पर वे परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पौलुस के निर्देशों को मानने को तैयार रहते थे। क्या यह अद्‌भुत नहीं होगा कि दूसरे लोग हमारे विषय में कहें कि हम *सदा से* स्वर्ग की बात मानते आए हैं?

पौलुस ने फिलिप्पियों से आज्ञापालन के पथ पर बने रहने का आग्रह किया: ''सो ... जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, ... न केवल मेरे साथ रहते हुए, पर विशेषकर अब मेरे दूर रहने पर भी। ...'' पौलुस पहले फिलिप्पियों के साथ कई बार रहा था (देखें प्रेरितों 16:12-40; 20:1-3, 6)। वह वहां के भाइयों से चाहता था कि वे वैसा ही व्यवहार करें जैसे वह अभी भी उनके साथ हो। जब मैं बच्चा था और मेरे माता-पिता मुझे कोई काम करने को देते थे, तो मैं आम तौर पर उनके देखते समय बड़ी मेहनत से काम करता था। जब वे मुझे अकेला छोड़ देते तो कई बार मैं काम करने के बजाय खेलने लग पड़ता। कई लोग बड़े होकर ''बच्चों वाली हरकतें'' छोड़ते नहीं हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 13:11; KJV)। वे नियोक्ताओं के सामने रहने पर तो कठिन काम करते हैं पर उनके वहां न होने पर कम काम करते हैं। पौलुस ने कहा कि ऐसे लोग ''मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों की नाईं दिखाने के लिए सेवा'' करते हैं (इफिसियों 6:6)।

दुख की बात है कि कुछ लोग आत्मिक जिम्मेदारियों में ऐसा ही करते हैं। वे जब तक कोई देखता है कि वे क्या कर रहे हैं, तब तक धार्मिक काम करने का दिखावा करते हैं, जिससे लोग उनके प्रयासों को सराहें। जब कोई देख नहीं रहा होता तो अपने समय और गुणों का इस्तेमाल प्रभु के काम में करने में उनकी दिलचस्पी कम होती है। पौलुस नहीं चाहता था कि फिलिप्पी ऐसी हों। NCV में है ''यह और भी महत्वपूर्ण है कि जब मैं तुम्हारे साथ न हूं तो तुम आज्ञा मानो।'' उनकी आज्ञाकारिता ''उस समय'' और भी आवश्यक थी। क्योंकि (1) काम न करने का दबाव बढ़ रहा था (1:28-30) और (2) उन्हें व्यक्तिगत प्रोत्साहन देने के लिए पौलुस के बिना कुछ लोग लड़खड़ा सकते हैं। आपको और मुझे परमेश्वर की आज्ञा क्यों माननी चाहिए? हमें वफ़ादारी से प्रभु के पीछे चलना सीखना आवश्यक है, तब भी जब दूसरों को इसका पता न हो और तब भी जब हमें कोई धन्यवाद न कहे। परमेश्वर की आज्ञा को मानना सीखना सही होने के कारण मसीही के रूप में बढ़ने के लिए आवश्यक है।

काम करने की आवश्यकता

उसकी अनुपस्थिति में काम न करने के बजाय पौलुस ने फिलिप्पियों से कहा कि वे ''अपने अपने उद्धार के लिए काम'' करें (2:12ख)। RSV में है ''अपने ही उद्धार का काम करो।'' डिनोमिनेशनों के टीकाकारों को पौलुस की बातें परेशान करती है। उदाहरण के लिए, उसकी बातें उन्हें परेशान करती हैं जिन्हें लगता है कि उद्धार से मनुष्य के प्रयासों का कोई सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि उन शब्दों का उन बातों से व्यक्ति के काम और अनन्त प्रतिफल के बीच कुछ सम्बन्ध का सुझाव मिलता है। ऐसी बातें उन्हें भी परेशान करती हैं। जो सिखाते हैं कि व्यक्ति एक बार उद्धार पाने के बाद कभी नाश नहीं हो सकता, क्योंकि इन शब्दों से यह संकेत मिलता है कि जब तक मसीही व्यक्ति कार्य नहीं करता, तब तक उसके द्वारा पाया गया उद्धार छिन सकता है। परिणाम स्वरूप कुछ लेखक उस वचन को ''व्याख्या द्वारा समझाने'' की कोशिश में दूर तक चले जाते हैं।

जिन्हें लगता है कि फिलिप्पी की मण्डली में बहुत गड़बड़ थी वे सुझाव देते हैं कि ''उद्धार''

शब्द पाप से उद्धार के लिए नहीं है बल्कि सदस्यों के चिड़चिड़ेपन से ''छुटकारा'' या उनके मतभेदों से ''चंगाई'' है। बेशक ''उद्धार'' शब्द का अर्थ मण्डली की समस्याओं से छुटकारा बताने वाला हर व्यक्ति इस वचन की व्याख्या करने का दोषी नहीं है; कई तो यूं ही मानते हैं कि वचन यही कह रहा है। तौभी क्योंकि यह ढंग ''उद्धार'' को पाप से उद्धार के अलावा कुछ और बना देता है इस कारण इसमें उनके लिए जिनका पहले नाम बताया गया है विशेष आकर्षण है।

यह सच है कि यूनानी शब्द (*soterias*) का अनुवाद ''उद्धार'' का अनुवाद और कई तरह से हो सकता है। परन्तु ''पौलुस बार-बार *soterias* का इस्तेमाल अनन्त उद्धार के अर्थ में करता है (1:28; रोमियों 1:16; 10:1, 10; 13:11; 2 कुरिन्थियों 6:2; 7:10; इफिसियों 1:13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:8; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13)।''[1] निकट संदर्भ में किसी भी बात से यह विश्वास नहीं होता कि प्रेरित यहां अलग अर्थ के साथ शब्द का इस्तेमाल कर रहा था। मेरी लाइब्रेरी में हर मानक अनुवाद में फिलिप्पियों 2:12 का अनुवाद ''उद्धार'' है न कि ''छुटकारा'' या ''चंगाई।'' इसलिए हम अनुवाद को यहीं रहने देते हैं।

नया नियम मसीही लोगों के लिए काम करने की आवश्यकता पर बहुत कुछ कहता है (देखें 1 कुरिन्थियों 15:58; 2 कुरिन्थियों 5:10; कुलुस्सियों 1:10; याकूब 2:24; 1 पतरस 1:17)। मुझे गलत न समझें: नया नियम यह नहीं कहता कि हम उस काम के द्वारा जो हम करते हैं अपने उद्धार को *कमाते* हैं। रोमियों 11:6, इफिसियों 2:9 और 2 तीमुथियुस 1:9 जैसे हवाले विशेष रूप से बताते हैं कि हमारा उद्धार *विश्वास* के आधार पर परमेश्वर के अनुग्रह (वह कृपा जिसे कमाया नहीं जा सकता) हुआ है (इफिसियों 2:8)। साथ ही हमें यह समझना चाहिए कि *उद्धार दिलाने वाला* विश्वास *आज्ञाकारी* विश्वास यानी वह विश्वास है जो प्रेम के द्वारा *कार्य करता* है (देखें गलातियों 5:6)। एक टीकाकार ने लिखा है:

> जब तक हम इसकी मुख्य सामग्री को नहीं जानते कि यह *भरोसा* और *आज्ञापालन* है तब तक पौलुस के विश्वास की बात सही समझ नहीं आती। जब पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के विश्वास में आने की बात की (1 थिस्सलुनीकियों 1:8) तो उसने उनके *आज्ञापालन* की बात लिखी। रोमियों 1:8 में उसने ''तुम्हारा विश्वास'' लिखा और रोमियों 16:19 में ''तुम्हारा आज्ञा मानना,'' जिसका अर्थ स्पष्ट रूप में एक ही है। रोमियों 1:5 में उसने वास्तविक वाक्यांश ''विश्वास की आज्ञाकारिता'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ सम्भवतया ''आज्ञापालन जो विश्वास है'' है।[2]

एक और लेखक ने माना:

> ... विश्वास में आज्ञापालन शामिल है। यह सोचना दुखद बात है कि विश्वास करने का अर्थ केवल किसी बात को सच मान लेना है। नहीं! दुष्टात्मा भी मानेंगे कि परमेश्वर और यीशु मसीह वास्तविक है, पर फिर भी वे दुष्ट हैं।
>
> क्या आप आग के बीमे को मानते हैं? क्या आपने अपने घर का बीमा करवाया है? नहीं? तो फिर आप इसे नहीं मानते! याकूब ... केवल इतना कहता है कि बिना कर्मों के विश्वास मुर्दा है [याकूब 2:26]। हर मसीही व्यक्ति को याकूब की किताब अक्सर और

विशेषकर उसका दूसरा अध्याय पढ़ना चाहिए।[3]

आज्ञापालन के काम विश्वास का व्यावहारिक पहलू हैं। अपने कामों के द्वारा हम अपने विश्वास को व्यक्त करते हैं, अपने भरोसे को दिखाते हैं और अपने यकीन की सामर्थ का प्रदर्शन करते हैं। कहा जाता है कि हमारा उद्धार अपने कर्मों से हुआ है, पर हमारा उद्धार बिना उनके भी नहीं हो सकता।

आयत 12 में ''कार्य करो'' का अनुवाद एक मिश्रित शब्द,[4] *katergezomai* से किया गया है जिसका अर्थ ''जय पाना, प्राप्त करना'' है।[5] विलियम बार्कले ने सुझाव दिया है कि इस शब्द ''में पूर्ण करने का विचार सदा से है।''[6] NCV में ''अपने उद्धार को पूर्ण करने का काम करते रहो'' है। AB में है ''अपने उद्धार का काम करो (खेती, लक्ष्य के लिए और पूरी तरह से सम्पूर्ण)।'' यह तो ऐसा है, जैसे पौलुस ने कहा हो, ''अपने पिछले पापों से उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेने के समय तुम ने अच्छी शुरुआत की [देखें मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3-6, 17, 18], और तुम ने सेवा का जीवन जी लिया है-पर रुकने वाली कोई बात नहीं। अभी और बहुत काम है!''

हम में से हर किसी को मसीह के कार्य के लिए व्यस्त होना आवश्यक है। हमने पहले देखा था कि परमेश्वर की हर संतान के लिए सामान्य शर्तें व और शर्तें हैं जो मसीही व्यक्ति की योग्यताओं और अवसरों के अनुसार अलग-अलग हैं। बाद वाली शर्तों के सम्बन्ध में आपको प्रार्थनापूर्वक यह निश्चय करना होगा कि परमेश्वर आपसे क्या अपेक्षा करता है। शायद उसने आपको प्रचार करने या शिक्षा देने, प्रभु भोज तैयार करने, या प्रार्थना भवन की साफ़ सफ़ाई करने की योग्यता दी है। शायद उसने आपको एक प्रेमी और सहानुभूति भरा दिल दिया है, ताकि आप अपने पड़ोसियों की सहायता कर सकें। यदि आप जवान मां हैं तो वह आपसे उसके ढंग से अपने बच्चों का पालन पोषण करने पर ध्यान लगाने की उम्मीद करता है। यदि आप कोई नौकरी करते हैं तो यीशु चाहता है कि आप अपने सहकर्मियों के साथ सुसमाचार को बांटें। हो सकता है कि आपका अधिकतर समय बुजुर्ग माता पिता की देखभाल में बीते। *जो भी* काम करना हो उसे परमेश्वर की इच्छा से करने का *ढंग* है। पौलुस हमें बताता है कि परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया उसका ''काम का विवरण कैसे माना जाए।''

काम की शर्तें (2:12ग-18)

भक्तिपूर्ण ढंग से काम करें (2:12ग)

पहली शर्त भक्तिपूर्ण ढंग से काम करना ''डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य्य पूरा करते जाओ'' (आयत 12)। ''डरते हुए और कांपते हुए''? अनुवादित शब्द ''डरते'' (यू.: *phobos*) वही शब्द जिससे हमें अंग्रेजी शब्द *phobia* (फोबिया) मिला है। क्या इसका अर्थ यह है कि प्रभु की सेवा करते हुए हमें बहुत ही घबराहट और परेशानी में होना चाहिए? नहीं, पवित्र शास्त्र में अन्य जगहों की तरह यहां ''डरते'' शब्द का इस्तेमाल गहरे भय और आदर के अर्थ में है। 1 पतरस 3:2 में *phobos* का अनुवाद ''भय सहित पवित्र चाल चलन'' हुआ है। हमें परमेश्वर से दूर मन का ढांचा नहीं करता, बल्कि परमेश्वर की महानता

और हमारी उस पर निर्भरता को मान लेना उसकी ओर लाता है। AB में आयत 12 में व्याख्या देते शब्द जोड़े गए हैं:

> ... अपने ही उद्धार का ... कार्य ... भक्ति और भय से और कांपते हुए करो (अपने ऊपर भरोसा न करके, बड़ी सावधानी से, विवेक की कोमलता, प्रलोभन यानी किसी भी बात से जिससे परमेश्वर को ठेस लग सकती है और मसीह का नाम बदनाम हो सकता है)।

परमेश्वर की सेवा करते हुए हमें भय से अपंग नहीं हो जाना चाहिए। परन्तु साथ ही हमें अपने काम की गम्भीरता और उसकी महानता को नहीं भूलना चाहिए जिसकी हम सेवा करते हैं। हम उसे ''हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं, जिससे वह प्रसन्न होता है'' (इब्रानियों 12:28) उसे भेंट दे सकते हैं।

आत्मविश्वास से काम करो (2:13)

कोई कह सकता है, ''परमेश्वर के लिए काम करना तो कठिन लगता है। लगता नहीं मैं इसे कर सकता हूं'' इस बात को समझें कि आपसे इसे अकेले करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। प्रभु केवल आपको नियम ही नहीं देता, बल्कि सामर्थ भी देता है। काम करने की दूसरी शर्त यह समझते हुए कि परमेश्वर हमारी सहायता कर रहा है *दृढ़ता से* काम करना है। पौलुस ने आगे कहा, ''क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है'' (आयत 13)।

यूनानी शब्द (*energein*) का अनुवाद ''काम'' वही शब्द है जिससे हमें अंग्रेज़ी के ''energy'' (ऊर्जा) ''energize'' शब्द मिले हैं। आयत 13 में यह शब्द हैं। दोनों बार इसका अनुवाद ''काम'' हुआ है। परमेश्वर हमें ''ऊर्जा देता'' है। वह किस बात में ऊर्जा देता है? उसके लिए काम करने के लिए, हमें कम से कम दो बातें की आवश्यकता है: उसके लिए काम करने की इच्छा और उसके लिए काम करने की योग्यता। हमारा वचन पाठ यही बताता है कि वह हम में ''काम'' करके और ''इच्छा और काम दोनों बातों'' से, यानी दोनों में सहायता करता है। CEV का अनुवाद है ''परमेश्वर तुम्हें तैयार करने और उसकी आज्ञा मानने के योग्य बनाने के लिए तुम में काम कर रहा है।'' NRSV में है कि वह ''तुम्हें अपने भले आनन्द के लिए इच्छा और काम दोनों में योग्य बना रहा'' है। क्या परमेश्वर इसे आश्चर्यकर्म के द्वारा करता है? नहीं, हम ने पहले हम में परमेश्वर के काम करने के कुछ ढंगों पर चर्चा की है। वह काम करने की ''इच्छा'' पैदा करने के लिए हमारे अन्दर काम कर सकता है। यह इच्छा वचन को पढ़ने के द्वारा, समय पर दिए गए संदेश, मसीही मित्र के प्रोत्साहन या विवेक को हिलाकर किया जा सकता है। ये सभी कारक हमारे जीवनों में परमेश्वर का काम करने के भाग हैं। महत्वपूर्ण बात यह समझना नहीं है कि परमेश्वर हम में कैसे काम करता है, बल्कि यह मानना है कि वह काम करता है। परमेश्वर हमें काम करके चले जाने और हमें अपने आप उस काम को करने के लिए छोड़ जाने को वह काम नहीं देते। वह हमारे साथ रहता है उसकी सेवा करते हुए हम कभी अकेले नहीं होते (देखें मत्ती 28:20)।

परमेश्वर हमारे अन्दर ''अपनी स्वेच्छा निमित्त'' काम करता है। जब हम स्वेच्छा से और

लगन से उसकी सेवा करते हैं तो उसे अच्छा लगता है। उसे आज्ञा का न माना जाना अच्छा नहीं लगता और जब कोई विद्रोह की स्थिति में मर जाता है तो उसका दिल टूटता है (देखें भजन संहिता 5:4; यहेजकेल 18:23, 32)। परन्तु जब लोग पाप से मुड़कर धार्मिकता की ओर जाते हैं तो उसे अच्छा लगता है (देखे यहेजकेल 33:11)। वह "अपनी प्रजा से प्रसन्न रहता है" (भजन संहिता 149:4)।

आयत 12 कहती है कि हम अपने उद्धार के लिए "काम करें," परन्तु आयत 13 कहती है कि परमेश्वर हम में "काम करता" है। ये दोनों आयतें उलझाने वाली हो सकती हैं। यदि हम केवल 12 आयत को ही लेते तो यह निष्कर्ष निकाल सकते थे कि उद्धार पाना पूरी तरह से मनुष्य की ज़िम्मेदारी है। आयत 13 को अलग कर दें तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पूरी ज़िम्मेदारी परमेश्वर ही की है। नये नियम के लेखकों ने उद्धार में परमेश्वर के योगदान और व्यक्ति के योगदान वाली आयतों का मिलने पर कम प्रयास किया–जैसे इफिसियों 2:8: "क्योंकि विश्वास के द्वारा [मनुष्य का योगदान] अनुग्रह [परमेश्वर का योगदान] ही से तुम्हारा उद्धार हुआ। ..." परन्तु नये नियम के लेखकों ने संक्षेप में समझाने का कम प्रयास किया है कि उद्धार दान कैसे हो सकता है ("अनुग्रह के द्वारा") जबकि इसके साथ ही मनुष्य को उस दान को पाने के लिए कुछ करना ("विश्वास के द्वारा") आवश्यक है। स्पष्टतया उनके लिए यह जानना काफी था कि परमेश्वर ने वह किया है जो मनुष्य जाति नहीं कर सकती थी। परन्तु यह कुछ करने के लिए मनुष्य जाति के लिए अभी भी आवश्यक था। चार्ल्स आर. अर्डमैन ने फिलिप्पियों 2:12, 13 के सम्बन्ध में लिखा है:

> इस कारण यहां ईश्वरीय सम्प्रभुता और मुक्त मानवीय एजेंसी की दो महान सच्चाइयां बताई गई हैं। काम तो परमेश्वर का ही काम है, और इसके साथ यह मनुष्य का भी काम है। परमेश्वर काम का कुछ भाग नहीं करता बल्कि पूरा काम परमेश्वर का है और सारा काम मनुष्य का है। पौलुस विचार के स्पष्ट झगड़े को मिटाने का प्रयास नहीं करता।[7]

पौलुस के विपरीत हम में से कइयों को दो बातें मिलाए जाने के लिए विवश समझते हैं जिसमें पैट हैरल ने "ईश्वरीय–मानवीय नाटक" कहा।[8] इस कोशिश के समरूपता को बनाए रखने का परिणाम "आंशिक इनकार या दोनों में से किसी की उपेक्षा या और सच्चाइयां शामिल न हों" तब तक इसमें कोई हानि नहीं है।[9] हम इनमें से किसी को कम करने की हिम्मत नहीं करते जिसे परमेश्वर ने किया है या जो वह हमें करने को कहता है।[10] दोनों में संतुलन होना आवश्यक है। इस पर अर्डमैन ने कहा:

> मानवीय जिम्मेदारी का बोध तब तक निराशा में ले जाता है जब तक यह परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ में आत्मविश्वास से संतुलित न हो। परमेश्वर की सामर्थ और कार्य में विश्वास, जब तक मानवीय इरादे और सचेत प्रयास के द्वारा न हो, तब तक इसका परिणाम नैतिक नपुंसकता और विनाश होगा।[11]

क्या हमें अपना उद्धार "कमाना" पड़ेगा? हां, कमाना पड़ता है। क्या परमेश्वर उसे योग्य बनाने के लिए "हम" में काम करता है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह करता है क्योंकि वह

हम में काम करता है हम दृढ़ता से उसके साथ काम कर सकते हैं!

स्वेच्छा से काम करें (2:14)

फिर पौलुन से कहा कि स्वेच्छा से काम करने की आवश्यकता है। ''सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो'' (आयत 14)।''कुड़कुड़ाए'' के लिए शब्द (यू.: *goggusmos*) का अर्थ ''गुप्त और खिन्न नाराजगी, बुड़बुड़ाहट, शिकायत व्यक्त करना''[12] है। सप्तत्ति अनुवाद में इस शब्द का इस्तेमाल जंगल में इस्राएलियों में बुड़बुड़ाने और शिकायत का वर्णन करने के लिए किया गया है (देखें निर्गमन 15:24; 16:7, 8; गिनती 11:1; 16:4)। 1 कुरिन्थियों 10:10 में यह चेतावनी देने के लिए पौलुस ने इस्राएलियों का उदाहरण इस्तेमाल किया: ''न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उन में से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए गए।''

आयत 14 में ''कुड़कुड़ाए'' शब्द का इस्तेमाल मिश्रित यूनानी शब्द *dilalogimos* से किया गया है जो ''तर्क'' (*logismos*) के लिए शब्द के साथ उपसर्ग *dia* को मिलाता है। इस शब्द का अर्थ ''भीतरी तर्क देना'' है,[13] परन्तु नये नियम में प्रमुखता से पाया जाने वाला अर्थ ''बुरे विचार''[14] है। फिलिप्पियों 2:14 में ASV में इस शब्द का अनुवाद ''पूछताछ करना'' और CJB में इसका अनुवाद बहस करना है।

टीकाकार इस बात पर असहमत हैं कि यह कुड़कुड़ाहट परमेश्वर के विरुद्ध थी या दूसरे मसीही लोगों केसाथ। यह मानने वाले कि यह आयत फिलिप्पी की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करती है इस विचार के पक्ष में हैं कि यह बहस साथी मसीही लोगों के बीच में है। अन्यों का मानना है कि यह सहमती परमेश्वर के साथ थी-अय्यूब की तरह फिलिप्पी भी परमेश्वर के ''साथ तर्क करना'' या अपना केश उसके पास लाना चाहते थे (देखें अय्यूब 31:35-37)। आज के लोग जीवन के पक्षपाती होने या उनके साथ इसकी मांग पर बहस करना चाहते हैं। दोनों व्याख्याओं को अलग करना अनावश्यक है। जब इस्राएलियों ने मूसा के विषय में शिकायत की (गिनती 16:41) तो वे यहोवा के विरुद्ध बुड़बुड़ा रहे थे (गिनती 17:10)। जब कलीसिया के लोग साथ नहीं चलते, तो परमेश्वर इसे व्यक्तिगत रूप से लेता है (देखें 1 यूहन्ना 4:20)।

जब मैं ''कुड़कुड़ाना'' या ''बुड़बुड़ाना'' शब्दों को पढ़ता हूं तो मुझे कुछ बच्चों का ध्यान आता है। जब उनके माता पिता उन्हें कुछ कहते हैं तो वे कुड़कुड़ाते हैं तो कई बार तो अपने माता-पिता के साथ बहस भी करते हैं। पौलुस हम से अपने स्वर्गीय पिता के निर्देशों का पालन करने में उन से बेहतर होने की इच्छा करता होगा।

''बिना कुड़कुड़ाए या बुड़बुड़ाए'' सब कुछ करने की शिक्षा में सामान्य प्रासंगिकता है। परन्तु संदर्भ में यह विशेषकर उस काम की बात है जो हम प्रभु के लिए करते हैं। प्रभु के काम में लगे कुछ लोग अपने प्रयासों कुड़कुड़ाते और बुड़बुड़ाते रहकर खत्म कर लेते हैं। उसके लिए काम करते हुए हमारे कुड़कुड़ाने को परमेश्वर कैसे देखता है? मान लीजिए कि किसी ने आपको कोई उपहार दिया है। शायद महंगा उपहार, या जिसकी इच्छा आपको बड़ी देर से थी। परन्तु वह उपहार देते हुए उसकी कीमत पर शिकायत करता है या ऐसा संकेत देता है कि वह तो आपको कुछ नहीं देना चाहता था। आपको कैसा लगेगा? हो सकता है कि आप उससे कहें आप अपना

उपहार अपने पास ही रखें! आप प्रभु के ईश्वरीय निर्देशों को पूरा करते हुए कुड़कुड़ाते हैं तो उसे कैसा लगता है। हमें स्वेच्छा से काम करना चाहिए।

अहानिकारक ढंग से काम करें (2:15)

हमें *अहानिकारक ढंग से* काम करना चाहिए। यह कहने के बाद कि "सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो" (आयत 14) पौलुस ने आगे कहा, "ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, (जिन के बीच में तुम जीवन का वचन दिए हुए जगत में जलते दीपकों की नाईं दिखाई देते हो)" (आयत 15)।

हाल ही में मैंने अपने घर की मरम्मत के लिए कई लोगों को पैसे दिए। मैं ऐसे काम करने वाले चाहता था जो भरोसे योग्य, लगने से काम करने वाले और कुशल हों, पर मुझे उनकी व्यक्तिगत जीवनों का इतना पता नहीं था। कई सांसारिक कार्य दुष्ट लोगों द्वारा उनकी आत्मिकता की कमी के उस काम को प्रभावित किए बिना किए जा सकते हैं। आत्मिक कामों में ऐसा नहीं है। चरित्र में किसी प्रकार का दोष यीशु के नाम में किए जाने वाले प्रयासों के लिए धब्बा है।

हमें कैसा चरित्र रखने की आवश्यकता है? पौलुस ने पहले कहा कि हमें "निर्दोष" होने की आवश्यकता है (आयत 15)। अनुवादित शब्द "निर्दोष" का यूनानी शब्द का 1:10 वाले अनुवादित शब्द "सच्चे" वाला नहीं है चाहे उनका अर्थ एक ही है। यहां हमें नकारात्मक पूर्व सर्ग के साथ "शिकायत का कारण या आधार" कि अर्थ वाला शब्द मिलता है। *Amemptos* का एक रूप, यह शब्द पूर्वसर्ग *a* के साथ *memtos* (memephomai से, "दोष निकालना") को मिलाता है।[15] इस शब्द का अर्थ "बिना दोष के" हो सकता है। "बिना दोष के" होने का वास्तव में एकमात्र ढंग परमेश्वर की दृष्टि में होना है, जब वह अपने अनुग्रह से हमें क्षमा करता है। परन्तु इस वचन में यह हवाला "ऐसा जीवन जीना जिस पर आलोचना की उंगली न उठ सके" है।[16]

फिर पौलसु ने एक अप्रत्याशित शब्द "भोले" जोड़ दिया। आज बहुत से लोग भोलेपन को इतना ऊंचा दर्जा नहीं देते। इसे अज्ञानता, अनुभवहीनता और बुद्धू होने से मिलाया जाता है। तौभी प्रभु हम से "कबूतरों की नाई भोले" बनने की अपेक्षा करता है (मत्ती 10:16)। फिलिप्पियों 2:15 और मत्ती 10:16 में दोनों जगह "भोला" के लिए शब्द यूनानी भाषा के शब्द *akeraios* का एक रूप है, जो "मिलाना" के अर्थ वाले नकारात्मक पूर्वसर्ग a और *kerannumi* से लिया गया है। इसका अर्थ "अनमिला है।" इसका इस्तेमाल यूनानियों द्वारा पानी से अनमिली वाइन या अन्य धातुओं से अनमिली धातु से किया जाता था।[17] हमारे वचन पाठ में यह उस मन की तस्वीर दिखाता है जिसे प्रभु चाहता है। NIV में CJB "शुद्ध" है। हमें केवल बाहर से ही अच्छे "निर्देष" नहीं बल्कि अन्दर से भी अच्छे ("भोला") होना आवश्यक है।

निर्दोष और भोला होने के गुण "निष्कलंक" शब्द में पाए जाते हैं। "निष्कलंक" का अनुवाद "दोष" "आरोप," "दोष" "उपहास" या "अपमान" के लिए एकल यूनानी शब्द *mo-mos* के साथ नकारात्मक पूर्वसर्ग *a* लगाकर किया जाता है।[18] हमें ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जो मसीह के धर्म का संसार द्वारा अपमान बने। परन्तु पौलुस तो संसार को 'टेड़ा और हठीला' कहता है। पापी, दुष्ट संसार कुछ भी सोचे इससे क्या फर्क पड़ता है?" फर्क पड़ता है क्योंकि

हम संसार को भलाई के लिए प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं। फर्क पड़ता है क्योंकि हम लोगों को अंधकार का राज्य छोड़कर ज्योति के राज्य में लाना चाहते हैं (देखें कुलुस्सियों 1:13)।

मुझे याद है कि पहली बार मुझे मेरे पिता ने जो वोकेशनल खेती के टीचर हैं, ओक्लाहोमा नगर में ओक्लाहोमा सरकारी मेले में छोड़ दिया था। वह मुझे और अन्य छात्रों को अपने पशुओं के पास रुकने के लिए मेले में लाए थे, जिन्होंने बाद में अपने बेहतरीन वर्गों में इनाम के लिए मुकाबला करना था। पिता जी हमें मेले में कई दिन पहले छोड़कर साउथ वैस्टन ओक्लाहोमा में पढ़ाने वापस चले गए थे और उन्होंने मुकाबलों से थोड़ा पहले लौटना था। जाने की तैयारी करते हुए उन्होंने मेरी जैकेट की ओर ध्यान दिया जिसमें ''रोपर'' नाम सिला हुआ था। उन्होंने कहा ''भूलना मत, यह मेरा भी नाम है।'' उनके कहने का अर्थ स्पष्ट था कि मैं कुछ भी गलत काम करूं उससे केवल मेरा नाम ही नहीं, बल्कि उनके नाम पर भी फर्क पड़ेगा। इसी प्रकार से जो कुछ भी हम करते हैं उससे हमारे पिता का नाम भी पता चलता है, चाहे अच्छे के लिए हो या बुरे के लिए। इसलिए हमें यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ''हमारा'' सार्वजनिक व्यवहार आलोचना से परे हो (रोमियों 12:17; फिलिप्स)।

यदि हमारे ऊपर कोई आरोप नहीं है तो हम ''ज्योति'' की तरह चमकेंगे। NASB में फिलिप्पियों 1:15 ''दीपकों'' पर यह नोट है: ''या रौशनियां या तारे।'' ''दीपकों'' के लिए सत्पत्ति अनुवाद में अकाश की रौशनियों यानी सूरज, चांद और तारों के लिए ''रौशनियों'' के लिए शब्द है (उत्पत्ति 1:14-18)। मेरे दिमाग में ओक्लाहोमा की गर्मियों की रातें आती हैं। उस देश में रहते हुए मैं गर्मियों में आम तौर पर बाहर सोता था। तारों को, घने आकाश में फैली आकाश की रौशिनियों की चमक को ताकते ताकते मुझे नींद आ जाती थी।

आयत 15 के ''दीपकों'' के लिए घनी पृष्ठभूमि ''टेढ़े और हठीले लोग'' हैं। CJB में ''टेढ़े'' की जगह ''मुड़ा हुआ'' है। NIV में ''हठीले'' के बजाय ''वंचित'' है। पुराने नियम में इस शब्दावली का इस्तेमाल विद्रोही इस्राएलियों के वर्णन के लिए किया गया है (व्यवस्थाविवरण 32:5)। कई बार मैं आज के संसार की दुष्टता के व्याप्त होने से परेशान हो जाता हूं, पर अपने आपको याद दिलाता हूं कि संसार सदा से ''टेढ़ा और हठीला'' रहा है (देखें मत्ती 17:17; प्रेरितों 2:40)। मैं यह भी याद करता हूं कि यदि संसार ''टेढ़ा और हठीला'' न होता तो ''मेरे इस छोटे दीपक'' की भी कोई आवश्यकता नहीं होनी थी।[19] जब वह हर तरह सूरज की तेज़ किरणें चमक रही हों तो दीपक की रौशनी की आवश्यकता नहीं होती। संसार जितना अंधियारा है उतने ही उसे हमारे ''दीपकों'' की आवश्यकता है क्योंकि रौशनी होने से तो ''दीपकों'' की लौ जाती रहेगी।

काम में लगे रहो! (2:16)

हमें काम में *लगे रहना* भी चाहिए। आयत 14 में आरम्भ हुआ वाक्य अभी खत्म नहीं हुआ। फिलिप्पियों को ''जगत में दीपकों की नाईं'' देने की चुनौती देने के बाद पौलुस ने कहा, ''जीवन का वचन लिए हुए जगत में दीपकों के समान दिखाई'' दो (आयत 15ख)। ''रौशनी'' का रूपक तारों से बदलकर हाथ में पकड़ने वाले दीये तक आ जाता है। मैं किसी को एक टॉर्च आगे को पकड़कर रखने की कल्पना करता हूं। संदर्भ में ज़ोर *दूसरों के लिए* रौशनी देने के ढंग अर्थात संसार के लोगों को रास्ता ढूंढ़ने में सहायता करना है। अनुवादित शब्द ''लिए हुए'' का

अनुवाद ''आगे को किए हुए'' भी हो सकता है।[20] दोनों विचारों को मिलाया जा सकता है: हमें दीये को पकड़कर रखना था जिससे दूसरे लोगों को दिखाए दे और वे उसके पीछे पीछे चल सकें।

हमें जिसे आगे को पकड़ना है वह ''जीवन का वचन'' है। ''जीवन का वचन'' परमेश्वर का वचन है। भजनकार ने कहा है कि परमेश्वर का वचन उसके मार्ग के लिए ज्योति है (भजन संहिता 119:105)। इसे ''जीवन का वचन'' कहा जाता है क्योंकि यह आत्मिक जीवन देता है। NCV में इसे ''शिक्षा जो जीवन देती है'' कहा गया है। कई लेखक ध्यान दिलाते हैं कि यीशु को जीवन का वचन कहा गया है (1 यूहन्ना 1:1)। फिर दोनों विचारों में यहां थोड़ा अन्तर है। हम नये नियम को पकड़कर रखे बिना जो यीशु को प्रकट करता है जीवन के रूप में उसे पकड़े रख सकते हैं। हम कसकर या आगे की ओर वचन को कैसे पड़ सकते हैं? अपने जीवनों के द्वारा (मत्ती 5:14-16), परन्तु अपने होंठों के द्वारा भी (मत्ती 28:18-20)। पैट हैरल के अनुसार, ''पौलुस यहां फिलिप्पियों को प्रचार करने में लगे रहने को समझा रहा है''[21]-और मैं जोड़ता हूं, ''सिखाने में।''

पौलुस ने अपने पाठकों को कायम रहने के लिए और प्रोत्साहन दिया: ''कि मसीह के दिन मुझे घमण्ड करने का कारण हो, कि न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ'' (आयत 16)। ''मसीह का दिन'' उस दिन को कहा गया है जब यीशु वापस आएगा और हर किसी का न्याय करेगा। प्रेरित ने चाहा कि उस दिन ''महिमा करने का कारण'' हो-या, जैसा कि NIV और हिन्दी में है, ''घमण्ड करने का कारण।'' पौलुस की अपने ऊपर घमण्ड करने की कोई इच्छा नहीं थी (देखें गलातियों 6:14), परन्तु वह फिलिप्पियों पर ''घमण्ड'' करना चाहता था कि वे किस प्रकार प्रभु में बने रहे और अन्त तक विश्वासी रहे।

यदि वे अन्त तक टिके रहे तो पौलुस को पता था कि उसका ''दौड़ना और परिश्रम करना व्यर्थ नहीं गया।'' इस वाक्य में दो रूपक मिलते हैं। पहला तो दौड़ में भाग लेने वाले को केवल यह पता चलना है कि अपने इतने प्रयासों के बाद वह अयोग्य रहा है। वह ''व्यर्थ'' भागा। दूसरा एक कारीगर का है जिसे पता चलता है कि वह टुकड़ा जिस पर उसने परिश्रम किया है वह गंदा हो गया है और उसे बेचा नहीं जा सकता। पौलुस तम्बू बनाने का काम करता था (प्रेरितों 18:2, 3), शायद उसके मन में तम्बू का कपड़ा बुनने में लगने वाले कौशल और प्रयास की बात हो। पौलुस के मन में जो भी ''परिश्रम'' था वह इस उदाहरण में ''बेकार'' था। मैं जल्दी से यह कह दूं कि इस हवाले में पौलुस की चिंता यह नहीं है कि उसका उद्धार होगा या वह नाश हो जाएगा। उसे अपने उद्धार का यकीन था (फिलिप्पियों 1:21, 23)। इसके बजाय वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि फिलिप्पियों के ऊपर लगाया गया समय और उर्जा बेकार नहीं गए।

मैं पौलुस की चिंता को समझता हूं मैं उन लोगों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं जिन्हें मैंने सिखाया और वह वफ़ादार रहें हैं, परन्तु मैं दुख से भर जाता हूं जब दूसरों के बारे में सोचता हूं जो उदासीन हो गए हैं या विश्वास को छोड़ गए हैं। मैंने उन से कइयों के साथ उन्हें व्यक्तिगत रूप से सिखाने और प्रोत्साहित करने रहने में कई घण्टे लगा दिए। मुझे सबसे दुखी यही बात करती है जब मैं सुनता हूं कि मैं किसी प्रियजन का प्रभु और उसके लोगों के साथ सही सम्बन्ध नहीं रहा। एक अर्थ में पौलुस ने फिलिप्पियों को बताया, ''यदि तुम अपने काम में बने नहीं रहते, तो इससे मेरे उद्धार पर असर नहीं पड़ेगा पर मेरा दिल अवश्य टूटेगा!''

आनन्द से काम करो! (2:17, 18)

हमारे वचन पाठ की आयतों में उसने संकेत दिया कि उसे यकीन है कि फिलिप्पियों के साथ उसकी मेहनत *बेकार* नहीं जाएगी। इस वचन का अन्त बार बार आने वाले आनन्द के विषय पर ज़ोर देने के साथ होता है; "आनन्दित" के लिए यूनानी शब्द 17 और 18 आयतों में चार बार मिलता है। ("आनन्दित" और "आनन्द" दोनों शब्द एक ही मूल शब्द से हैं।) हमें *आनन्दित* रहना चाहिए चाहे जैसे भी परिस्थितियां हों, और इसमें हमारा काम भी शामिल है।

राल्फ़ मार्टिन ने 17 और 18 आयतों को "पूरे तथ्य का सबसे व्यक्तिगत हवाला" कहा:[22] "और यदि तुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लोहू भी बहाना पड़े तौभी मैं आनन्दित हूं, और तुम सब के साथ आनन्द करता हूं। वैसे ही तुम भी आनन्दित हो, और मेरे साथ आनन्द करो।"

इन आयतों में पौलुस ने एक याजक के बलिदान भेंट करने का रूपक इस्तेमाल किया। उसने "लहू के बलिदान के रूप में" अपने आप बहाए जाने से आरम्भ किया। मूल धर्मशास्त्र का अक्षरश: अर्थ केवल "बहाया जाना" है, परन्तु क्रिया का इस्तेमाल आमतौर पर लहू का बलिदान बहाए जाने या अर्पित किए जाने के लिए किया जाता था।[23] अर्पित करना (लहू की भेंटों को) मूर्तिपूजक और यहूदी धार्मिक संस्कारों में आम बात था। (यहूदी बलिदानों के सम्बन्ध में, देखें गिनती 15:5, 7, 10; 28:7, 14; होशे 9:4.) पौलुस स्पष्ट मृत्यु की अति वास्तविक सम्भावना की बात कर रहा था। बाद में उसने मृत्यु दण्ड सुनाए जाने के बाद, दूसरी रोमी कैद के दौरान इसी शब्दावली का इस्तेमाल किया (2 तीमुथियुस 4:6)। पौलुस ने वर्तमान काल का इस्तेमाल किया जो संकेत देता है कि उसके मन में अपनी मृत्यु की सम्भावना कितनी स्पष्ट थी। परन्तु प्रेरित ने जब रोमी दण्ड दिए जाने का विचार किया जिसमें उसका सिर उसके धड़ से अलग कर दिया जाना था, तो उसने इसे भय की नहीं बल्कि आदर की बात समझा। उसने अपना लहू बहाए जाने को अपने परमेश्वर के सामने अर्पित किए जाने के रूप में देखा।

पौलुस ने फिलिप्पियों के विश्वास के "बलिदान और सेवा के साथ अपना लहू" बहाए जाने से इस रूपक को जारी रखा। NIV में है "बलिदान और सेवा जो तुम्हारे विश्वास से आते हैं।" फिलिप्पियों का अर्थ उनका मसीह को स्वीकार करना और उसमें उनका भरोसा ही नहीं बल्कि ये सारे काम और समर्पण भी था जिनके द्वारा उनको विश्वास दिखाया जाता था।[24] पौलुस ने फिलिप्पियों के आज्ञाकारी विश्वास को परमेश्वर को भेंट किए गए बलिदान के रूप में देखा (देखें रोमियों 12:1, 2; फिलिप्पियों 4:18; इब्रानियों 13:15, 16)। उसके मन में अपनी मृत्यु का अर्पित किया जाना उनके जीविनों के बलिदान सहेजकर प्रभु को की जाने वाली भेंट थी।

अपनी मृत्यु पर विचार करते हुए क्या पौलुस इसी कारण दुखी था? नहीं, यह तो आनन्दित होने का कारण था: "और यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लोहू भी बहाना पड़े तौभी मैं आनन्दित हूं, और तुम सब के साथ आनन्द करता हूं" (फिलिप्पियों 2:17)। आखिर यदि वह मारा जाता तो उसने अपने प्रभु के पास चले जाना था (1:23)। परन्तु उसे मालूम था कि उसकी मृत्यु से फिलिप्पी दुखी हो जाएंगे। यदि वे यह सुनकर कि इपफ्रुदीतुस बीमार है परेशान हो गए थे, तो जैसा कि फिलिप्पियों 2:26, 28 में मिलता है, तो प्रेरित की मृत्यु की खबर सुनकर उनका क्या हाल होता। इसलिए उसने उन्हें भी आन्दित होने का आग्रह किया:

"वैसे भी तुम भी आनन्दित हो वो और मेरे साथ आनन्द करो।" NIV में "सो तुम्हें भी मेरे साथ खुश होना और आन्दित होना चाहिए।"

हमारा वचन पाठ एक दूसरे के साथ आनन्द करने की बात से खत्म होता है। मैं इस कार्य को इस विचार के साथ समाप्त करना चाहता हूं कि मसीही लोगों के रूप में हमारे साथ कुछ भी हो जाए हमें आनन्दित रहना चाहिए (देखें भजन संहिता 118:24)। हमारे जीवन में दुख के पल आएंगे, पौलुस के जीवन में भी आए थे (फिलिप्पियों 3:18; 2 कुरिन्थियों 2:4), परन्तु हमारा मुख्य स्वभाव प्रसन्नता वाला होना चाहिए। एक बार किसी वक्ता ने कहा, कि मसीही लोगों को गड़रिये के कुत्तों (चरवाहों की सहायता के लिए प्रशिक्षित कुत्ते) की तरह होना चाहिए। किसी श्रोता ने इसका अर्थ पूछा तो वक्ता ने बताया कि "गड़रिये का कुत्ता चाहे कुछ भी हो जाए हर हाल में अपने मालिक की आज्ञा का पालन करता है-गर्मी हो या सर्दी, बारिश हो या सूखा और काम कठिन हो या आसान।" यह तो सराहनीय काम है। पर मुझे गडरिये के कुत्ते की सबसे अधिक पसन्द है वह यह है कि जब वह अपने काम को पूरा कर लेता है तो वह अपने मालिक के पास *पूंछ हिलाता हुआ* वापस आ जाता है!" हम आनन्द से काम करें।

सारांश

परमेश्वर ने हम सब को करने के लिए काम दिया है। वह इसे हम से कैसे करवाना चाहता है? आज्ञा मानने की आवश्यकता, काम करने की आवश्यकता, भक्तिपूर्ण ढंग से, आत्मविश्वास से, स्वेच्छा से, अहानिकारक ढंग से, काम में, आनन्द से काम करो। इस प्रकार से जिससे हमारे जीवन समृद्ध हों और हमारे जीवन को महिमा मिले।

टिप्पणियां

[1]पेट एड्विन हैरेल्ल, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द फिलिप्पियंस,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, संपा. एवरेट फर्ग्यूसन (ऑस्टिन, टैक्ससः आर. बी. स्वीट कं., 1969), 97-98. [2]मैक्सी डी. डन्नम, *गलेशियंस, इफिशियंस, फिलिपियंस, कोलोशियंस, फिलेमन,* द कम्युनिकेटर कमेंट्री, संपा. लायड जे. ओगिल्वी (वाको, टैक्ससः वर्ड बुक्स, 1982), 285. [3]मनफोर्ड जॉर्ज गुज़के, *प्लेन टॉक ऑन फिलिपियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः लैम्पलाइटर बुक्स, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 104. [4]*Katergazomao* "काम" (*ergazomai*) के लिए क्रिया के साथ उपसर्ग *kata* को मिलाता है। इस मामले में क्रिया के कार्य को गहरा देता है। (*दि एनेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* [लंदनः सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, लिमिटेड, 1971], 223; डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एक्सपेंडिड वाइन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन आर. कोहेलेन्बर्गर त्रितीय विद जेम्स ए. सवेन्सन [मिनियापोलिसः बेथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984], 1244)। [5]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट, abr.* संपा. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रेडरिच, अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 421. [6]विलियम बार्कले, *दि लेटर टू द फिलिपियंस, कोलोशियंस एंड थेसलोनियंस,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फियाः वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 41. [7]चार्ल्स आर. अर्डमैन, *दि एपिस्टल टू द फिलिपियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1983), 89. [8]हेरल्ल, 97. [9]अर्डमैन, 90. [10]कुछ लोगों ने परमेश्वर के अनुग्रह पर यहां तक ज़ोर दिया है कि वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि वे उद्धार पाने के लिए व्यक्ति को कुछ करने की आवश्यकता नहीं है।

[11]अर्डमैन, 90. [12]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदनः सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स लिमिटेड, 1971), 81. [13]वाइन, 314. [14]ब्रोमिले, 156. [15]*एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 18, 263. [16]राल्फ पी. मार्टिन, *दि एपिस्टल*

ऑफ़ पॉल टू द फिलिपियंस, संशो. संस्क., टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 118. [17]वाइन, 526. [18]*एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 19, 274. [19]''मैं हूं दीपक एक छोटा'' अमेरिका तथा अन्य देशों में गाया जाने वाला बच्चों का एक गीत है। मत्ती 5:14–16 व अन्य हमारे लिए परमेश्वर की महिमा के लिए दीपकों की नाईं चमकने की आवश्यकता बताते हैं। [20]NASB में ''कसकर'' पर यह टिप्पणी है: ''या *आगे*।'' कई अनुवादों में जिसमें KJV और ASV भी हैं ''कसकर'' के बजाय ''आगे'' है। [21]हेरल्ल, 100. [22]मार्टिन, 122–23. [23]हेरल्ल, 101. [24]अर्डमैन, 93.